युवा जीवन

मई 2023

कभी देर नहीं करता!

पश्चात्तावना

प्रभु देर नहीं करता!

प्यारे युवा दिलों को प्यार भरा अभिवादन!

हम चाहते हैं कि हमारे जीवन में सब कुछ बिना किसी देरी के हो। कई बार हमारे लिए यह आवश्यक होता है कि हम किसी अच्छी वस्तु या आशीष को प्राप्त करने के लिए प्रतीक्षा करें। आज की दुनिया में जहां हर चीज तेज और तीव्र है, देरी करना हर किसी के लिए बुरी बात लगती है।

परमेश्वर ने वादा किया है, वह निश्चित रूप से करेगा, वह देरी नहीं करेगा। अधिकांश समय हम एक समय को पूर्वनिर्धारित करके और आशीर्वाद और चमत्कारों को प्राप्त करने की प्रतीक्षा करते हैं। लेकिन उस चमत्कार और आशीष को पाने के लिए हमें परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करनी होगी। जब हमारा प्रतीक्षा समय समाप्त हो जाता है, तो हम ऐसा न होने से थक जाते हैं और अंततः टूटा हुआ महसूस करते हैं।

यूसुफ ने 17 वर्ष की आयु में एक दर्शन देखा। परन्तु यहोवा ने इस दर्शन को पूरा करने में 13 वर्ष का समय लिया। जब वह फिरौन के साम्हने खड़ा किया गया, तब वह तीस वर्ष का था। वह अपने नियत समय में मिस्र का शासक नहीं बना, परन्तु परमेश्वर ने उसे अपने नियत समय और दिन में शासक ठहराया।

इब्राहीम 75 वर्ष का था जब यहोवा ने कहा कि वह उसे आशीष देगा और उसे एक महान राष्ट्र बना देगा। परन्तु जब वह सौ वर्ष का हुआ तब ही उसके द्वारा इसहाक का जन्म हुआ। वे 25 वर्ष देरी नहीं थे, बल्कि उस आशीष के पूर्ण होने की प्रतीक्षा के वर्ष थे।

शायद परमेश्वर ने आज भी आपको कई प्रतिज्ञाएँ और आशीषें दी हैं। वे निश्चित रूप से सच होंगे और आपके हाथों तक पहुंचेंगे। कारण यह है, कि यह परमेश्वर का वचन है और प्रभु को इसे पूरा करना होगा। लेकिन उस आशीष का समय और दिन आपके अनुसार नहीं है। यह निश्चित रूप से परमेश्वर के दिन और घड़ी में पूरा होगा। यह हम ही हैं जो अनावश्यक देरी के बारे में सोचते और परेशान होते हैं। याद रखें कि हम एक ऐसे परमेश्वर की सेवा करते हैं जो विश्वासयोग्य है और अपने समय में सब कुछ सुंदर बनाता है।

तो प्यारे नौजवानों, उसकी इच्छा और चाहत आपके जीवन में, उसके समय और घड़ी में अवश्य पूरी होगी।

"परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखते हुए उसकी बाट जोहते रहो"
वह बिना देर किए पूरा करेगा!
वह कभी देर नहीं करता!

मसीह की सेवा में
अविनाश।

एक नई शुरुआत...

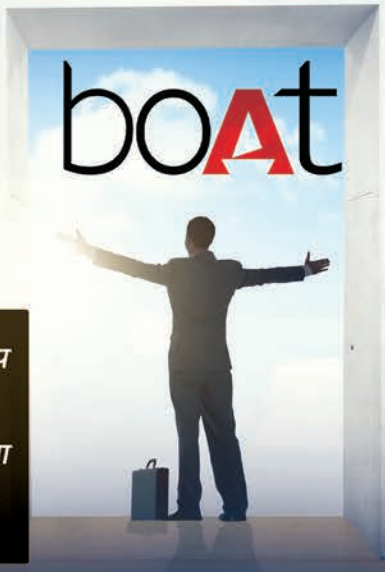

प्यारे नौजवानों को सलाम! मुझे आशा है कि आप हर दिन प्रगति के पथ की ओर बढ़ रहे हैं। एक विजेता की जीवन यात्रा जिसने कठिन संघर्ष किया और थोड़े समय में सफल हुआ!

अमन गुप्ता का जन्म 4 मार्च, 1982 को दिल्ली में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। अपनी स्कूली शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी करने के बाद, उन्होंने अपने पिता की इच्छा पर सीए को चुना। सीए में रुचि धीरे-धीरे कम होने लगी। फिर भी, उन्होंने सीए पूरा किया और 2002 में भारत के सबसे कम उम्र के सीए बने।

पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्हें सिटी बैंक में मैनेजर के रूप में काम करने का मौका मिला। बाद में अमन गुप्ता ने अपने पिता के साथ 'एडवांस्ड टेलीमीडिया प्राइवेट लिमिटेड' नाम से एक नया व्यवसाय शुरू किया। दुर्भाग्य से व्यवसाय शुरू तो हुआ, पर उचित प्रगति नहीं हुई। इसलिए अमन गुप्ता ने अपनी पत्नी की सलाह पर करियर उन्मुख एमबीए कोर्स का विकल्प चुना। फिर उन्होंने दूसरी कंपनी में काम करना शुरू कर दिया।

वर्ष 2013 में अमन गुप्ता ने अपने दोस्त समीर अशोक के साथ बीड़ा उठाया और एक नई कंपनी की स्थापना की, जिसे इमेजिन मार्केटिंग सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड कहा जाता है। बाद में उन्होंने वर्ष 2016 में 'boAt' ब्रांड नाम से अपनी खुद की इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स कंपनी की स्थापना की। अमन गुप्ता boAt कंपनी के सह-संस्थापक और CMO हैं।

उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से जनता के लिए boAt इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के अस्तित्व का विज्ञापन करना शुरू किया। समीर अशोक ने boAt कंपनी के मार्केटिंग क्षेत्र का प्रभार संभाला। अमन ने पहली बार अपने उत्पादों को दिल्ली में पेश किया। जब उन्होंने ने पहली बार boAt को भारत में पेश किया वहाँ पहले से ही200 से अधिक मौजूदा ईरफ़ोन कंपनियां, लेकिन फिर भी boAt, वांछित आकार, गुणवत्ता में लोगों की जरूरतों और अपेक्षाओं के आधार पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों को वितरित करने के लिए और हेडफ़ोन, ईरफ़ोन, स्पीकर, स्मार्ट घड़ियों इत्यादि जैसे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की उत्पादित किस्में को संभालने में सफल रहा।

boAt उच्च प्रदर्शन वाले उत्पाद प्रदान करना जारी रखता है जिनका उपयोग आज बहुत से लोग करते हैं। थोड़े ही समय में यह एक बड़ी सफलता बन गई है। boAt दुनिया के शीर्ष 5 पहनने योग्य ब्रांडों में से एक है।

अमन गुप्ता को वित्तीय वर्ष 2020 में 'बिजिनेस वर्ल्ड यंग एंटरप्रेन्योर्स 2019', 'सुपर 30 सीएमओ-2020', 'लोकमत मोस्ट स्टाइलिश एंटरप्रेन्योर्स-2021' जैसे अवॉर्ड मिल चुके हैं। 2020 के वित्तीय वर्ष में इस कंपनी का राजस्व 500 करोड़ में है। अपनी कड़ी मेहनत के कारण, वह कम उम्र में ही एक महान उद्यमी बन गए हैं।

प्रिय युवा विजेता जो इसे पढ़ रहे हैं! बिना कठिनाई के हमारे जीवन में कुछ भी हासिल नहीं होता है। उसके लिए एक कीमत चुकानी होगी। अमन गुप्ता ने अपना करियर शुरू करने के तुरंत बाद प्रगति नहीं की। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। फिर उसने एक नई शुरुआत देखी। अपनी प्रतिभा को विकसित और कार्यान्वित करना शुरू करें! आपकी जिंदगी में भी एक नई शुरुआत होगी!.

अनुग्रह पर अनुग्रह...

सैमूएल आइसक

प्रिय नौजवानों, हम मानते हैं कि इस युवा विश्व पत्रिका के माध्यम से हर महीने कई लोगों की गवाही पढ़कर आपका विश्वास मजबूत हो रहा है और आप प्रभु के लिए जोश के साथ उठ रहे हैं। इस महीने भी, हम आपको एक जीवित गवाही पेश करने के लिए उत्साहित हैं।

आइए एक भाई की गवाही सुनें, जो एक मसीही परिवार में पैदा हुआ, प्रभु के भय में पला-बढ़ा, प्रभु से अनगिनत आशीषों को प्राप्त किया, अपने कॉलेज के दिनों में गर्व का मार्ग प्रशस्त किया, लेकिन पश्चाताप किया और अब भक्तिपूर्वक प्रभु के लिए जीवन व्यतीत कर रहा है।

हमें अपने और अपने परिवार के बारे में बताएं।

मेरा नाम सैमूएल आइसक है। मेरे पिता का नाम एंथोनी राज है। हम अपने परिवार में पाँच लोग हैं। मेरे पिता चर्च के बच्चों की सेवकाई के लिए काम करते हैं। मेरी मां भी उनके साथ सेवकाई में शामिल होती हैं।

चूँकि मैं एक इंजीलवादी परिवार से ताल्लुक रखता था, इसलिए मेरा पालन-पोषण बहुत ही आदर के साथ हुआ था, मैं बचपन से ही परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले सभी काम करता था जैसे कि दैनिक प्रार्थना करना और वचन पढ़ना।

बचपन से ही मैं अच्छे अंक लाता था जब मैं तमिल मीडियम में पढ़ रहा था।

हमें अपने स्कूली जीवन के बारे में बताएं।

मैंने कक्षा पाँच में 500 में से 500 अंक प्राप्त किए। मेरे शिक्षकों ने मेरी शैक्षिक उत्कृष्टता को देखा और मेरे पिता से मुझे छठी कक्षा में एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए जोर दिया।

इसलिए मुझे छठी कक्षा में एक नए स्कूल में स्थानांतरित कर दिया गया।चूंकि मैंने तब तक तमिल में पढ़ाई की थी, मुझे अंग्रेजी आसानी से समझ नहीं आती थी। मैंने बहुत मुश्किलों से पढ़ाई की। हालांकि मैं तब तक टॉपर था, मैं पहली बार छठी कक्षा में फेल हुआ था। मैं इसे बिल्कुल स्वीकार नहीं कर सका। मैं कक्षा के 50 अन्य छात्रों में से एक था। बहुत से शिक्षक यह भी नहीं जानते कि मैं अस्तित्व में था।

बहुत दुख की बात है ... क्या किसी ने आपकी मदद की जब आप अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा पर बदले जाने करके इतने स्तब्ध थे?

हां, जब मैं मुश्किल में था तो मेरे पिता की सलाह ने मेरी बहुत मदद की। हर दिन पाठों का अध्ययन करने से पहले बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करना मेरी आदत थी।

इसके साथ ही मेरे पिता ने मुझे अंग्रेजी बाइबिल पढ़ने की सलाह दी। इसके अलावा, उन्होंने मुझे एक शब्दकोष दिया और अज्ञात शब्दों का अर्थ खोजने के लिए मेरा मार्गदर्शन किया।

अपने पिता की सलाह का पालन करने के बाद, मैंने अच्छी पढ़ाई शुरू की और अपनी पढ़ाई में अच्छी प्रगति की। सार्वजनिक परीक्षा से ठीक पहले, मैं फुटबॉल खेलते समय गिर गया और मेरे हाथ टूट गए। लेकिन परमेश्वर ने मुझे परीक्षा लिखने के लिए बल दिया। मुझे थोड़े ही समय में बहुत दर्द होता था। इसलिए मैं छोटे-छोटे ब्रेक लेता और परीक्षा लिखना जारी रखता।

अच्छा, तुम कब बच गए जो बचपन से ही मसीह में पाले गए थे?

मेरी 8वीं कक्षा के दौरान मुझे बच्चों की संगति के माध्यम से उद्धार का अनुभव मिला। मैं रोजाना चर्च जाता रहा और प्रार्थना करता था। मैंने अपनी 11वीं और 12वीं कक्षा के दौरान जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज द्वारा आयोजित अचीवर्स मीटिंग में भाग लिया था। जब मैं 12वीं का अध्ययन कर रहा था तब मैं सेवकाई में एक स्वयंसेवक के रूप में शामिल हुआ, इससे मुझे अपने प्रार्थना जीवन में और भी आगे बढ़ने में मदद मिली।

नए स्कूल में आपका अनुभव कैसा था?

कक्षा में शीर्ष 5 में से एक होने के बावजूद मुझे शिक्षकों से कोई पहचान नहीं थी। मुझे उस कोचिंग क्लास में भी शामिल नहीं किया गया जो उन्होंने 10वीं कक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने वाले छात्रों के लिए आयोजित की, ताकि अधिक अंक प्राप्त किए जा सकें। चाहे दुनिया मुझे भूल गई, मेरे स्वर्गीय पिता ने मुझे याद रखा। सभी के आश्चर्य के लिए मैंने स्कूल का दूसरा सर्वोच्च अंक प्राप्त किया। मैं टॉपर से सिर्फ एक अंक पीछे रह गया था। इसके बाद जहां-जहां तिरस्कार मिला वहां-वहां सम्मानित किया गया। परमेश्वर ने मुझे गवाही के रूप में ऊपर उठाया।

यह तो अद्भुत है... यहोवा ने बड़ी विजय दी है और जहां आपका तिरस्कार हुआ वहां आपका सिर ऊंचा किया है। आपने बाद की कक्षाओं में कैसे अध्ययन किया? इस तरह के अच्छे ग्रेड मिले?

मैंने उसी स्कूल में अपनी पढ़ाई जारी रखी। मेरी 12वीं की बोर्ड परीक्षा की तैयारी करते हुए, मैं एक बड़ी लड़ाई से गुज़रा। प्रैक्टिकल बोर्ड परीक्षा से एक हफ्ते पहले, मेरे पिता को दिल का दौरा पड़ा और उन्हें आईसीयू में तिरुनेलवेली के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। अपने पूरे जीवन में उनके मार्गदर्शन में बड़े होने के बाद, मुझे नहीं पता था कि जब वह गंभीर थे तब क्या करना था। मैं घटनाओं के अचानक परिवर्तन से घबराया गया था। लेकिन परमेश्वर, मेरे और मेरे पिता के साथ एक दिलासा देने वाले के रूप में थे। सभी को आश्चर्य हुआ, मेरे पिता को एक हफ्ते के भीतर एक सामान्य वार्ड में स्थानांतरित कर दिया गया। मैं प्रायोगिक परीक्षा में भाग लेने के लिए सीधे स्कूल गया। मेरी परीक्षा के दौरान परमेश्वर मेरे साथ थे। और उसने मुझे मेरे स्कूल में तीसरा सबसे बड़ा अंक दिया।

हालेलुयाह ! सफलता पर सफलता! आपके कॉलेज का जीवन कैसा था ?

उसके बाद मुझे नहीं पता था कि कॉलेज में क्या पढ़ना है। मैंने बहुत प्रार्थना की और नाज़रेथ के एक कॉलेज में दाखिला लिया और गणित की पढ़ाई की। जब हम अपने जीवन को यीशु के हाथों में सौंपते हैं, तभी हम जीवन की सबसे बड़ी आशीषें प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि इन्हीं कॉलेज के दिनों में मैंने पवित्र आत्मा का अभिषेक प्राप्त किया और यूजी और पीजी भी प्रथम श्रेणी से पास किया। मुझे कॉलेज का अध्यक्ष और जिला कलेक्टर कार्यालय में कॉलेज का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति के रूप में चुना गया था। मुझे कॉलेज की फ़ुटबॉल टीम का कप्तान भी चुना गया था।

यीशु की मदद से बहुत सारी जीत। उसके बाद आपने क्या अध्ययन किया?

जब सब कुछ इतना अच्छा चल रहा था तो मुझे गर्व महसूस होने लगा। फेल होने वाले छात्रों का मैं इस घंमड से मज़ाक उड़ाया करता था कि मैं पढ़ने में अच्छा हूँ, और मैं उनसे इस तरह बात करता कि उनके दिल को ठेस पहुँचे। यह बात जो मजाक के रूप में शुरू हुई थी, मुझमें गर्व का गहरा बीज बोने लगी। धर्मी परमेश्वर ने मुझ पर अपना उचित न्याय किया। जिस वर्ष में मैंने पीजी पूरा किया तो मुझे अप्रत्याशित रूप से मेरी बांह पर करंट लगा और गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया। अगर मेरे भाई ने बिजली बंद करने में 5 सेकंड की देरी की होती, तो मैं उसी दिन मर जाता। लेकिन परमेश्वर की कृपा ने मेरी रक्षा की। लेकिन खून की भारी कमी के कारण मैं बिस्तर पर पड़ गया। इसके बाद भी मैंने अपना अभिमान नहीं छोड़ा। मैंने एक कॉलेज में एम.फिल के लिए आवेदन किया था, लेकिन दुर्घटना के कारण मैं कक्षा में उपस्थित नहीं हो सका। मैं ज्ञान प्राप्त करने के लिए कक्षाओं को सुनने का आदी था, इसलिए कॉलेज की अनुपस्थिति में, मेरे हाथ में चोट लगने के कारण मैं लिखने के लिए समर्थ नहीं था।

यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि एक छोटे से पाप, अभिमान के कारण ऐसे सफल जीवन को एक कठिन दौर से गुजरना पड़ा। आप इससे कैसे बाहर निकले?

हम सभी जानते हैं कि गणित को लिखे बिना सीखना असंभव है। चूंकि मैं ठीक से लिखने में सक्षम नहीं था, इसलिए मैं उस सेमेस्टर के एक विषय में फेल हो गया। पिछली बार मैं छठी कक्षा में फेल हुआ था। इसलिए इस असफलता ने मुझ पर गहरा आघात किया। मैंने जिन अन्य

विषयों में सफलता प्राप्त की थी, उनमें भी मैंने अधिक अंक नहीं प्राप्त किए। मुझे धमकाने और दूसरों को चोट पहुँचाने की अपनी गलती का एहसास हुआ। मैं परमेश्वर के चरणों में गिर गया और क्षमा मांगने लगा। मैंने उन दोस्तों से भी माफ़ी मांगी जिन्हें मैंने चोट पहुंचाई थी। परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली और मैंने बिना किसी रूकावट के डिग्री हासिल कर ली। उसके बाद मैंने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पीएचडी की पढ़ाई करने की कोशिश की। पीएच.डी. के लिए एक गाइड की जरूरत है। चूंकि मेरा बकाया का इतिहास रहा है, इसलिए मैंने सोचा कि कोई भी मेरा मार्गदर्शन करना नहीं चाहेगा। फिर भी मुझे परमेश्वर पर विश्वास था और उसने मेरे लिए एक अच्छा मार्गदर्शक निर्धारित किया। अब मैं अपनी पीएचडी पूरी करने की कगार पर हूं।

अद्भुत! जब आपने अपने पापों के लिए पश्चाताप किया तो परमेश्वर ने आपको ऊंचा किया। क्या आप हमारे युवा पाठकों के लिए कुछ साझा करना चाहते हैं?

भले ही आप एक निराशाजनक स्थिति में हैं, परमेश्वर पर आपका विश्वास सब कुछ को एक आशीष में बदल देगा। हमारी एक छोटी सी गलती भी हमारे जीवन को पटरी से उतारने की ताकत रखती है। इसलिए जब परमेश्वर हमें ऊंचा उठाते हैं, तो हमें इस पर गर्व महसूस नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, हमें परमेश्वर के सामने नम्रता से रहना चाहिए जिसने हमें ऊपर उठाया। भले ही हमने अनजाने में कोई गलती की हो, हमें उनके चरणों में अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए। हमारा प्रभु एक दयालु परमेश्वर है जो हमें क्षमा करता है चाहे हम कितनी भी बार ठोकर खाएँ। वह हमें निर्बलता के समय बलवन्त करेगा। धन्य हैं वे सब जो उस पर भरोसा रखते हैं।

प्रिय नौजवानों! परमेश्वर भाई सैम आइसक के साथ था और जीवन भर उसका मार्गदर्शन कर रहा हैक्या अपनी आशीष अपने अभिमान को रास्ता देकर खोया है! आज ही मन फिराएं और आप अपनी खोई हुआई आशीष पुनः प्राप्त करेंगे!

युक्ति में महान

मूसा की उठाई हुई लाठी

हम इस श्रृंखला में इस्राएलियों के युद्धों और संघर्षों और उन रणनीतियों के बारे में पढ़ रहे हैं जिनका उपयोग परमेश्वर ने उन्हें बचाने के लिए किया। इसी क्रम में, इस महीने हम पढ़ने जा रहे हैं कि पहली लड़ाई के बारे में जिसका इस्राएलियों ने सामना किया और कैसे परमेश्वर ने पूरे युद्ध के दौरान उन्हें सलाह दी।

अभियान के दौरान, जब इस्राएली अपनी वादा की हुई भूमि कनान की ओर यात्रा कर रहे थे, तब अमालेकियों ने उनके खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। मिस्र में इतने वर्षों तक दास के रूप में रहने के बाद, सभी इस्राएली जानते थे कि बस ईंट भट्ठे में दिन-रात काम करना है। क्या आप उनकी मन की स्थिति की कल्पना कर सकते हैं जब उन्हें ऐसी स्थिति में धकेल दिया गया था जहां उन्हें वास्तविक हथियारों का उपयोग करके सेना के खिलाफ लड़ना पड़ा था?

क्या आप इस बारे में सोच रहे हैं कि आप इस कठिन परिस्थिति से कैसे उबरेंगे जिससे आप गुजर रहे हैं? आप इससे कैसे छुटकारा पाने जा रहे हैं? क्या आप ऐसी स्थिति में हैं जहाँ आपको लगता है कि आपको कठिन लड़ाई लड़नी है? विश्वास रखें! हमारा परमेश्वर युक्ति करने में महान है।

बाइबिल से इस घटना में, परमेश्वर ने मूसा को जिस रणनीति का पालन करने का निर्देश दिया था, वह यह थी कि उसे पहाड़ की चोटी पर जाना था और अपनी छड़ी को पकड़ते हुए अपने हाथों को स्वर्ग की ओर उठाना चाहिए। क्या आप केवल अपनी छड़ी को ऊपर उठाकर लड़ाई जीत सकते हैं? हाँ। तुम कर सकते हो! यदि परमेश्वर ऐसा कहता है, तो ऐसा करने से तुम्हारी जीत होगी। कारण, "क्योंकि उस ने कहा, और वह हो गया; उस ने आज्ञा दी, और वह स्थिर रहा।"

इस घटना में हमारे लिए ध्यान देने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि मूसा वहाँ प्रार्थना के योद्धा के रूप में नहीं, बल्कि विश्वास के योद्धा के रूप में गया था। और मूसा ने यहोशू से कहा, हमारे लिये कई एक पुरूषों को चुन ले, और बाहर जाकर अमालेकियों से लड़। कल मैं अपने हाथ में परमेश्वर की लाठी के साथ पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूंगा।"(निर्गमन 17:9)

मूसा बहुत स्पष्ट रूप से कहता है, 'मैं परमेश्वर की लाठी को पकड़ कर खड़ा रहूंगा।' वह लाठी परमेश्वर का मूसा से वादा था, 'इससे तुम चमत्कार करोगे'। मूसा पहाड़ की चोटी पर, परमेश्वर की प्रतिज्ञा को मजबूती से थामे हुए खड़ा था। प्रिय नौजवानों, अगर तुम ध्यान से देखो तो यह नहीं लिखा है कि मूसा ने परमेश्वर से कुछ और कहा। इसके बजाय, वह प्रतिज्ञा के प्रतीक के रूप में लाठी को ऊंचा उठाए हुए दृढ़ विश्वास के साथ खड़ा था। हम वहाँ मूसा को विश्वास के योद्धा के रूप में खड़े हुए देख सकते हैं, इस वचन के अनुसार, "इसलिये सब से बढ़कर विश्वास की ढाल लेकर खड़े रहो" (इफिसियों 6:16)।

अपने संकट के समय में, अपने विलाप का शब्द न उठाओ, परन्तु उन प्रतिज्ञाओं को थामे रहो जो परमेश्वर ने तुम्हारे साथ एक लाठी की तरह की हैं। तब तुम्हारा युद्ध यहोवा का होगा। देखो, यद्यपि यह युद्ध वास्तव में इस्राएलियों और अमालेकियों के बीच में था, जब मूसा ने अपने आप से युद्ध करने की योजना नहीं बनाई, परन्तु परमेश्वर से पूछा और परमेश्वर की प्रतिज्ञा की हुई लाठी को पकड़े हुए विश्वासयोग्यता से खड़ा रहा, तब मूसा की लड़ाई परमेश्वर की हो गई।

इसलिए, जब विश्वासयोग्य और परमेश्वर के वचन पर भरोसा करने वाले पर कठिनाइयाँ आती हैं, तो लड़ाई परमेश्वर की होती है। परमेश्वर आपके लिए लड़ेगा!

बहुत ज़्यादा सोचना

मैं कॉलेज के तीसरे वर्ष में हूँ। जब मैं अपने दोस्तों और परिवार के साथ खुशी-खुशी बात कर रहा होता हूं या हंस रहा होता हूं तो मेरा दिमाग तरह-तरह के विचारों से घिर जाता है और मैं इसके बारे में लगातार सोचता रहता हूं। मैं उन विचारों से बाहर नहीं आ सका क्योंकि यह मेरी जानकारी से बाहर होता है। मैं ऐसे विचारों से सामान्य नहीं हो सकता। यह मुझे आधे रास्ते में पढ़ने रोक देता है और मैं किताब बंद कर देता हूं। मुझे कॉलेज में एक प्रोफेसर के रूप में काम करने की इच्छा है। ऐसा सोचने से मेरे सिर में दर्द होता है और मुझे नींद आ जाती है। क्या यह एक बीमारी है? क्या मुझे डॉक्टर के पास जाना चाहिए? मुझे समझ नहीं आता। कृपया मेरी समस्या का समाधान खोजने में मेरी मदद करें।

-सुरेश, कोयंबटूर।

प्रिय भाई सुरेश ! आपकी आंतरिक पीड़ा थाह लेने योग्य है। आज के युवा 'विचारों की दुनिया' में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि जीवन में कोई बड़ा फैसला लेते समय सोच-विचार कर लेना चाहिए।

यानी उच्च शिक्षा, कौन सी कंपनी ज्वाइन करनी है, शादी, घर बनाना, कार खरीदना आदि जैसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले सोचना स्वाभाविक है और सबसे अच्छा निर्णय लें। लेकिन कहा जाता है कि ज्यादा सोचना यानी किसी चीज के बारे में बार-बार मन में सोचना और उसी बात में अटक जाना।

किसी चीज के बारे में सोचना काफी स्वाभाविक है। लेकिन एक ही चीज़ के बारे में बार-बार गहराई से सोचने से निश्चित रूप से आपकी नींद, काम, रिश्ते, स्वास्थ्य और दैनिक जीवन प्रभावित हो सकता है। अतीत की घटनाओं के बारे में सोचने या भविष्य के बारे में चिंता करने में बहुत समय व्यतीत हो सकता है।

व्यर्थ के विचारों से बचने के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं...

1. उन्हें कम करने के लिए नोट करें

जरा सोचिए कि किस परिस्थिति और समय में आप उन विचारों में डूब जाते हैं। जब आप स्थिति और चीज को जानते हैं और उसके बारे में एक नोट बनाते हैं, तो आप उस विशेष चीज के बारे में सोचना बंद कर सकते हैं।

2. अपने विचारों को चुनौती दें

जब आपका मन जो कह रहा है तो उसके विपरीत सोचने की कोशिश करते हैं, तो आप उस विचार से बच सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब 'मैं परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाऊँगा' जैसे विचार उत्पन्न हों, तो अपने मन से कहो 'मैं उत्तीर्ण हो गया हूँ और अब मैं एक बड़ी कंपनी में काम कर रहा हूँ'। ऐसा करने से असफलता की भावना से बचा जा सकेगा।

3. अपने शरीर को हिलाना शुरू करें

बहुत सारे शोध बताते हैं कि व्यायाम ऐसे विचारों को रोकने में मदद कर सकता है। चलने या जॉगिंग से निश्चित रूप से फर्क पड़ेगा।

4. यदि संभव हो, चिकित्सा पेशेवरों से परामर्श करें

सुरेश, जैसा कि मैंने पहले कहा, यह कोई मानसिक विकार नहीं है। अगर आपको मदद की जरूरत है तो आप डॉक्टरी सलाह ले सकते हैं। एक चिकित्सक आपकी समस्या को बेहतर ढंग से समझ सकता है और इसे बड़े करीने से हल करने में आपकी मदद कर सकता है।

यदि आप अपने जीवन में भिन्न परिणाम चाहते हैं तो आपको केवल अपना मन बदलना है, और आप जानबूझकर अपने विचारों को चुनकर ऐसा कर सकते हैं। सबसे बढ़कर, बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है, "बाकी, भाइयों, जो सत्य है, जो कुछ आदर के योग्य और आदरणीय और प्रतीत होता है, जो कुछ भी न्यायसंगत है, जो कुछ शुद्ध है, जो कुछ प्रिय और भला है, जो कुछ दयालु और आकर्षक और अनुग्रहकारी है, यदि कोई सद्गुण और श्रेष्ठता है, यदि कोई प्रशंसा के योग्य है, तो उस पर विचार करें और तौलो और इन बातों को ध्यान में रखो [इन पर अपना मन लगाओ]।" [फिल. 4:8]। जब आप इस निर्देश का पालन करते हैं तो आप निश्चित रूप से उन विचारों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं जो आपके लिए परमेश्वर के अच्छे विचारों के विपरीत हैं। इसलिए प्रार्थना करो और कार्य करो। आपके जीवन से बेकार के विचार और नकारात्मक विचार गायब हो जाएंगे। एक आशा का जन्म होगा! एक नया रास्ता खुलेगा!

वह कभी देर नहीं करता!

इस वर्तमान युग के युवा अपनी सभी इच्छाओं को एक पल में पूरा करने की उम्मीद करते हैं। जो पीढ़ी पांच मिनट भी नहीं रुक सकती, वह न जाने कैसे अपने सपनों को साकार कर पाएगी। युवा चूजों को दुनिया देखने से पहले कुछ दिनों तक इंतजार करना होता है। अगर चूजों को लगता है कि प्रतीक्षा अवधि में देरी हो रही है और वे अपने खोल को तोड़कर बाहर आ जाते हैं, तो यह खतरे की संभावना होगी। इसी तरह जब आपके जीवन में देरी हो तो उसे धैर्य से सहन करें अन्यथा यह खतरे का कारण होगा। हमेशा याद रखें कि जीवन में हर रोकथाम एक प्रतीक्षा अवधि होती है।

हमारा परमेश्वर सब कुछ सही समय पर करेगा। उसकी घड़ी हमेशा होती है। कभी हमारी घड़ी धीरे चलती है और कभी जल्दी चलती है।

जब हम जीवन में रोकथाम का सामना करते हैं तो हमारा मन विभिन्न प्रश्नों से भर जाता है जैसे, परमेश्वर ने मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर क्यों नहीं दिया? या परमेश्वर ने अपने वादों को पूरा क्यों नहीं किया? अगर आपका मन ऐसे प्रश्नों से भरा है, तो आप अभी तक अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को नहीं समझ पाए हैं। ***"उसने अपने समय में सब कुछ सुंदर बनाया है।"(सभो 3:11)।*** वह देरी नहीं करता है। वह एक ऐसा परमेश्वर है जो हर चीज को सही तरीके से पूरी तरह से करता है।

इस्राएल के राजा शाऊल नबी शमूएल के आगमन के लिए सात दिनों तक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार नहीं था। लोगों को खुश करने और उन्हें जाने से रोकने के लिए, शाऊल ने उन बलिदानों को चढ़ाया जो शमूएल द्वारा किए जाने थे, जिससे उसे अपना राज्य खोना पड़ा।

परमेश्वर के दिए हुए दर्शन में भागने के बजाय अपने माता-पिता और दोस्तों को खुश करने की कोशिश करने वाले युवाओं को देखकर परमेश्वर का दिल दुखी होता है। बाइबल ***याकूब 5:11*** में कहती है, ***"निःसन्देह हम उन्हें धन्य मानते हैं, जो धीरज धरते हैं।"*** यदि शाऊल ने बलिदान नहीं चढ़ाए होते और शमूएल के आने की प्रतीक्षा नहीं की होती, तो वह अपना दर्शन और स्थान नहीं खोता।

यूसुफ के जीवन में सब कुछ परमेश्वर द्वारा 17 वर्ष की आयु में उसे दिए गए दर्शन के विपरीत था। दर्शन की पूर्ति के लिए उसे विभिन्न कठिनाइयों, परीक्षणों, छल-कपटों को सहना पड़ा, लेकिन उसने

इस आशा के साथ कि परमेश्वर एक दिन दर्शन को पूरा करेगा, दर्शन से विचलित हुए बिना 13 वर्षों तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की।

बहुत से लोग यह समझने में विफल रहते हैं कि प्रतीक्षा अवधि वह समय है जब परमेश्वर हमें बनाता है। यदि परमेश्वर ने 17 वर्ष की आयु में यूसुफ को मिस्र का शासक बनाया होता, तो हम नहीं जानते कि उसने कितनी कुशलता से कार्य को अंजाम दिया होता। इसलिए परमेश्वर ने पोतीपर के घर में और जेल उसे ढाला। युसुफ जानता था कि परमेश्वर उसे उन सभी बाधाओं के माध्यम से ढाल रहे थे जिनका उसे जीवन में सामना करना पड़ा था इसलिए उसने आपके जीवन में दर्शन की पूर्ति के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। क्या आपके जीवन में दर्शन की पूर्ति में देरी हो रही है? चिंता मत करें! परमेश्वर आपको उस क्षेत्र में ढाल रहे हैं जहां आप हैं। धीरज रखो, जब समय आएगा तब तुम्हारा दर्शन पुरा होगा।

" जब आशा में देरी होती है तो मन शिथिल होता है, लेकिन जब लालसा पुरी होती है, तो जीवन का वृक्ष लगता है।" नीतिवचन 13:5.

प्रिय नौजवानों! यद्यपि दर्शन के पूरा होने में बहुत समय लगा, परन्तु यूसुफ निराश नहीं हुआ और वह प्रभु से दूर नहीं गया। उसने इस आशा के साथ धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की कि जिस परमेश्वर ने दर्शन दिया था वह एक दिन अवश्य पूरा करेगा। तो, परमेश्वर ने से पूरा किया। उसी तरह, परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए एक दर्शन है। अगर देरी हो रही है तो चिंता न करें। वह निश्चित रूप से दर्शन को पूरा करेगा।

"क्योंकि दर्शन अभी नियत समय तक है; परन्तु अन्त में वही बोलेगा, और झूठ नहीं होगा; चाहे वह विलम्ब करे, उसकी बाट जोहते रहो; क्योंकि वह अवश्य पुरा होगा, उसमें देर न होगी।" हबक्कूक 2:3

ई युवा हर महीने हमारी युवा जीवन पत्रिका की प्रतियां अध्ययन करते है ।

क्या आप अपना पत्रिका प्राप्त करते हैं?

यदि आपको युवा जीवन पत्रिका चाहिए तो नीचे दिए गए फोन नंबर पर संपर्क करें

हमारा यीशु छुड़ाता सोशल मीडिया के द्वारा महीने मै पांचवा रविवार रिवाइवल इग्नीटर्स कार्यक्रम दोपहर 3 बजे से शाम 5 बजे तक लाइव टेलीकास्ट होती है। अधिक जानकारी के लिए ऊपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें

For more info: Jesus Redeems Youth Ministry, Nalumavadi, Tuticorin - 628211.
Tel: 04639-353535. **Cell:** 9750955548

पूरे मन से प्रभु की खोज करो

और वह आसा से भेंट करने के लिये निकला, और उस से कहा, "हे आसा, और सारे यहूदा और बिन्यामीन, मेरी सुनो। जब तक तुम उसके संग रहो तब तक यहोवा तुम्हारे संग रहेगा। यदि तुम उसको ढूंढ़ो, तो वह तुम को मिलेगा; पर यदि तुम उसे त्याग दो, तो वहतुम्हें त्याग देगा " (2 इतिहास 15:2)।

इस्राएल की भूमि दो भागों में विभाजित हो गई। एक को इस्राएल के राज्य के रूप में और दूसरे को यहूदा के राज्य के रूप में जाना जाता था। इस्राएल यहूदा राज्य का केंद्र था। इस्राएल पर आसा नाम का एक राजा राज्य करता था। आसा के पिता के समय देश अशुद्ध हो गया था। उसने ऐसे अशुद्ध कर्मकाण्ड किए जो यहोवा को प्रसन्न नहीं करते थे। लेकिन जैसे ही राजा आसा सत्ता में आया, देश में एक महान जागृति हुई। उसने लोगों को प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार चलने की शिक्षा देते हुए आत्मिक जागृति के लिए कार्य किए। पूरे देश में महान जागृति हुई। 2 इतिहास 14:2-5 में, हम पढ़ते हैं कि राजा आसा के शासन में भूमि शांत और धन्य थी।

क्योंकि आसा ने यहोवा की खोज की, इसलिये परमेश्वर ने उसको उसके सब कामों

में सफलता की आशीष दी। उस समय, इथियोपिया का राजा दस लाख सैनिकों की एक सैन्य टुकड़ी के साथ उसके विरुद्ध युद्ध करने आया। आसा अपनी सेना को परमेश्वर के पास ले गया, उससे प्रार्थना की, और फिर युद्ध के लिए चला गया। क्योंकि आसा ने पहिले यहोवा की खोज की, वह उसके पास खड़ा रहा, और उसको बड़ी जय दी। जब वह अपनी सेना के साथ विजयी होकर लौटा, तो परमेश्वर की आत्मा अज़रयाह नाम के एक नबी पर उतरा और वह राजा आसा से मिलने गया।

उसने ऊँचे स्वर में पुकारा "हे आसा, और सारे यहूदा और बिन्यामीन, मेरी सुनो। जब तक तुम उसके संग रहो तब तक यहोवा तुम्हारे संग रहेगा। यदि तुम उसे ढूंढ़ोगे, तो वह तुम को मिलेगा; परन्तु यदि तुम उसे त्याग दोगे, तो वह तुम्हें त्याग देगा" (2 इतिहास 15:2)।

हमें प्रभु की खोज कैसे करनी चाहिए ताकि वह अपने आप को हम पर प्रकट करे? हमें उसे पाने के लिए कैसे खोजना चाहिए? हमें प्रभु की आवाज सुनने के लिए कैसे खोजना चाहिए? हम उसके साथ नजदीकी संबंध कैसे रख सकते हैं? " प्रभु की यह वाणी है, और तुम मुझे अपने सारे मन से ढूंढ़ोगे और पाओगे। और मैं तुम्हें मिलूंगा..." (यिर्मयाह 29:13,14)। अपने पूरे दिल से, प्यास से, लालसा से और इच्छा से प्रभु को खोजो। आपको प्रभु को देखने और दर्शन करने की प्यास होनी चाहिए। और फिर "यदि आप प्यासे हैं और अपने पूरे दिल से खोजते हैं, तो मैं आपके द्वारा मिलूंगा," प्रभु का वादा करता है।

"उन्होंने अपने सारे मन से शपथ खाई, और अपने सारे प्राण से उसको ढूंढ़ा; और वह उन को मिला, और यहोवा ने चारों ओर से उनको विश्राम दिया" (2 इतिहास 15-15)। "किसी ने कभी भी परमेश्वर को नहीं देखा" (यूहन्ना 1:18)।

प्रभु परमेश्वर पहुंच से बाहर का एक प्रकाश में रहते हैं। उसे कभी किसी ने नहीं देखा। वह यहां तक कहते हैं कि उन्हें देखकर कोई आदमी जिंदा नहीं रह सकता। वह इतना

दीप्तिमान और इतना गौरवशाली है। उसकी महिमा को कोई नहीं देख सकता।

जैसा निर्गमन में कहा गया है, अध्याय 33, मूसा ने यहोवा की वाणी सुनी, ***"मैं तेरे संग चलूंगा, और मैं तुझे विश्राम दूंगा।"*** मूसा इस आवाज से प्रेरित था। उसने यह कहते हुए प्रभु से प्रार्थना की, ***"कृपया मुझे अपनी महिमा दिखाओ" (निर्ग. 33-18)।*** इसका मतलब क्या है? "मैं तुम्हारी आवाज सुनता हूं, मैं तुम्हें आग में से बोलते हुए सुनता हूं, तुम्हारी आवाज मेरे कानों में बज रही है, तुम मुझे शक्तिशाली रूप से इस्तेमाल करते हो, संकेत और चमत्कार हो रहे हैं, तुम मेरे साथ हो, मैं यह सब देखता हूं, लेकिन मुझे अपना चेहरा दिखाओ" कथन का अर्थ है। मूसा को प्यास लगी थी, यहोवा को देखने की लालसा थी, वह यहोवा को आमने-सामने देखने की लालसा रखता था। यहोवा ने कहा, "तुम मेरा चेहरा नहीं देख सकते, क्योंकि कोई मनुष्य नहीं जो मुझे देखे और जीवित रहे। यहाँ मेरे द्वारा एक स्थान है, और तुम चट्टान पर खड़े रहो। ऐसा ही होगा, जब तक मेरी महिमा उधर से निकलेगी, तब तक तुम मेरी पीठ का दर्शन पाओगे, परन्तु मेरे मुख का दर्शन न होगा।" परमेश्वर ने मूसा को अपनी पीठ दिखाई क्योंकि मूसा इसे सहन नहीं कर सकता था, अगर उसने खुद को अपनी सारी महिमा में दिखाया। वही प्रभु जिसने कहा 'किसी भी आदमी ने परमेश्वर को नहीं देखा' खुद को मूसा के सामने प्रकट करता है।

यशायाह 6 में: मैं यशायाह लिखता हूं, ***"मैं ने प्रभु को ऊंचे और ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा।"*** यशायाह ने उसे दूर से ही देखा था, तौभी उसकी महिमा प्रबल और दीप्तिमान थी। उसने अवश्य ही परमेश्वर को अपने सिंहासन पर विराजमान देखा होगा। उसके लेखन के द्वारा हम कल्पना कर सकते हैं कि यशायाह ने क्या देखा। यह यशायाह का अनुभव था। उत्पत्ति 28:13 में, परमेश्वर याकूब को एक दर्शन में दिखाई देता है। इस नए नियम के युग में हमारे लिए एक आशीष यह है कि वह अपने बेटे यीशु मसीह के माध्यम से खुद को हम पर प्रकट करता है क्योंकि हम महिमा के परमेश्वर को नहीं देख सकते हैं और जीवित रह सकते हैं। इसलिए यीशु ने कहा कि जो मुझे देखता है, वह पिता को देखता है। उस स्वर्गीय वैभव को त्याग कर वह पृथ्वी पर आ गया। यदि वह अपनी सारी महिमा में आया होता, तो संसार बना न रहता।

यीशु ने खुद को दीन किया, एक आदमी बन गया, मर गया और फिर से जी उठा। अपने पुनरुत्थान के बाद भी, उसने खुद को कई लोगों के सामने प्रकट किया। प्रेरितों के काम अध्याय 1 मैं बताता है कि उसने खुद को चालीस दिनों के भीतर पाँच सौ से अधिक लोगों के सामने प्रकट किया, यह साबित करते हुए कि वह जीवित था। अपने भाई याकूब को भी खुद को प्रकट किया। पौलुस लिखते हैं, "और सबसे आखिर में वह मुझे भी दिखाई दिया, जैसे कि एक असामान्य रूप से पैदा हुआ।" कई लोगों को परमेश्वर से मिलने का इरादा नहीं, इसलिए वे उनसे मिलने नहीं पाते। आपको प्रभु को देखने और उन्हें पूरे मन से खोजने की इच्छा विकसित करनी चाहिए।

परमेश्वर ने मूसा को यह कहते हुए संदर्भित किया, उसने मेरी उपस्थिति मांगी। यदि पुराने नियम के समय में उसकी महिमा को देखना एक आशीर्वाद था, तो यह हमारे लिए और भी बड़ा वरदान है कि हम यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार प्राप्त करें और पवित्र आत्मा से भर जाएं, जिसके द्वारा परमेश्वर हम पर खुद को प्रकट करता है। वह स्वयं को हम पर प्रकट करना चाहता है। वह अपने आप को हम सब पर प्रकट करता है जो उसे देखने की प्यास से भरे हुए हैं। वह आपको खोजने को तैयार है। यदि आप परमेश्वर के दासों के पीछे भागता रहो, तो वह आप से न मिलेगा। बस मसीह के चेहरे की तलाश करें। सुबह-सुबह उसकी तलाश करें, अपने पूरे दिल से उसकी तलाश करें, और उसे विश्वास के साथ खोजें, "किसी के कहने पर विश्वास मत करो, मुझे ढूंढो और मैं तुम्हारे सामने आऊंगा," यहोवा ने कहा है।

प्रिय युवा बच्चों! क्या आप में प्रभु को खोजने और उसकी आवाज सुनने का उत्साह है? 'यदि आप मुझे अपने पूरे मन से ढूंढेंगे, तो आप मुझे पा लेंगे। जब तुम मुझे ढूंढ़ोगे तब मैं तुम्हें मिलूंगा, यहोवा की यह प्रतिज्ञा है। उसे अपने पूरे दिल से और वह निश्चित रूप से खुद को आपके सामने प्रकट करेगा। आप प्रभु के साथ एक शानदार अनुभव से गुजरेंगे। क्या इससे बड़ा आशीर्वाद है? पूरी दुनिया में यह कहने से बड़ा कोई आशीर्वाद नहीं है, 'स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने वाले परमेश्वर मुझसे बात करते हैं। वह मुझे सुनते हैं और मुझे जवाब देते हैं'। उनकी तलाश करने की प्यास विकसित करें। पहले परमेश्वर को खोजो और बाकी सब अपने आप आ जाएगा। तुम्हारी बीमारियाँ दूर हो जाएँगी, तुम्हारी इच्छाएँ पूरी होंगी और चमत्कार होंगे!

परिचय

ओत्नीएल, कालेब के भाई कनज का पुत्र था। वह यहूदा के गोत्र का था। ओत्नीएल नाम का अर्थ है 'परमेश्वर की शक्ति' या 'परमेश्वर का शेर'। उसने कालेब की पुत्री अकसा से विवाह कर लिया। यहोशू के बाद वह चालीस वर्ष तक इस्राएलियों का न्याय करता रहा। वह इस्राएल में उठने वाला पहला न्यायी था। इस्राएल के लोगों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।

वे यहोवा को भूल गए और बाल देवताओं की सेवा करने लगे। सो परमेश्वर ने उन्हें मेसोपोटामिया के राजा कूशन-रिश्तैम के हाथ बेच दिया, और वे उसके अधीन आठ वर्ष तक दास रहे। 8 वर्ष के बाद जब लोगों ने यहोवा की दोहाई दी, तब यहोवा ने ओत्नीएल को उनका छुड़ाने वाला ठहराया।

गुण

- जब उनके ससुर ने उसे सूखी जमीन दी, तो उसने इसकी चिंता नहीं की।
- चुनौतियों से भरे समय में, जब इस्राएल की नई पीढ़ी जो यहोवा को नहीं जानती थी, एक ओर थी और दुगना दुष्ट राजा दूसरी ओर था, तब ओत्नीएल पीछे नहीं हटा, बल्कि अकेले यहोवा पर भरोसा करके लड़ा।
- इस्राएल छुड़ाया गया, क्योंकि यहोवा का आत्मा उस पर उतरा था। यहोवा ने मेसोपोटामिया के राजा को उसके हाथ में कर दिया जो उससे अधिक शक्तिशाली था।
- यहोशू के बाद, अच्छे न्यायी ओत्नीएल ने 40 वर्षों तक प्रभु में इस्राएल का नेतृत्व किया और देश में शांति थी।
- ओत्नीएल ने अच्छे नेतृत्व को जारी रखने के लिए येहू, दबोरा और गिदोन के लिए एक नींव के रूप में कार्य किया जो यहोशू के साथ समाप्त हुआ।

सीखने के लिए सबक

चूँकि ओत्नीएल यहोवा की इच्छा के अनुसार युद्ध में गया था, इसलिए यहोवा ने उसे उसमें विजय दी। सफलता तब मिलती है जब परमेश्वर की इच्छा पूरी होती है। इसके अलावा यहोवा ने उसे अकसा देकर आशीष दी। और उसको जल के सोते समेत देश मिला।

वह तीन पीढ़ियों के लिए एक आदर्श था (कालेब के दिनों में, उसके दिनों में और भविष्य के नेताओं के लिए जो परमेश्वर को नहीं जानते थे)। इसलिए आइए हम भी परमेश्वर की इच्छा पूरी करें और देश को अपने अधिकार में लें।

पढ़ें: न्यायियों 3:9-19

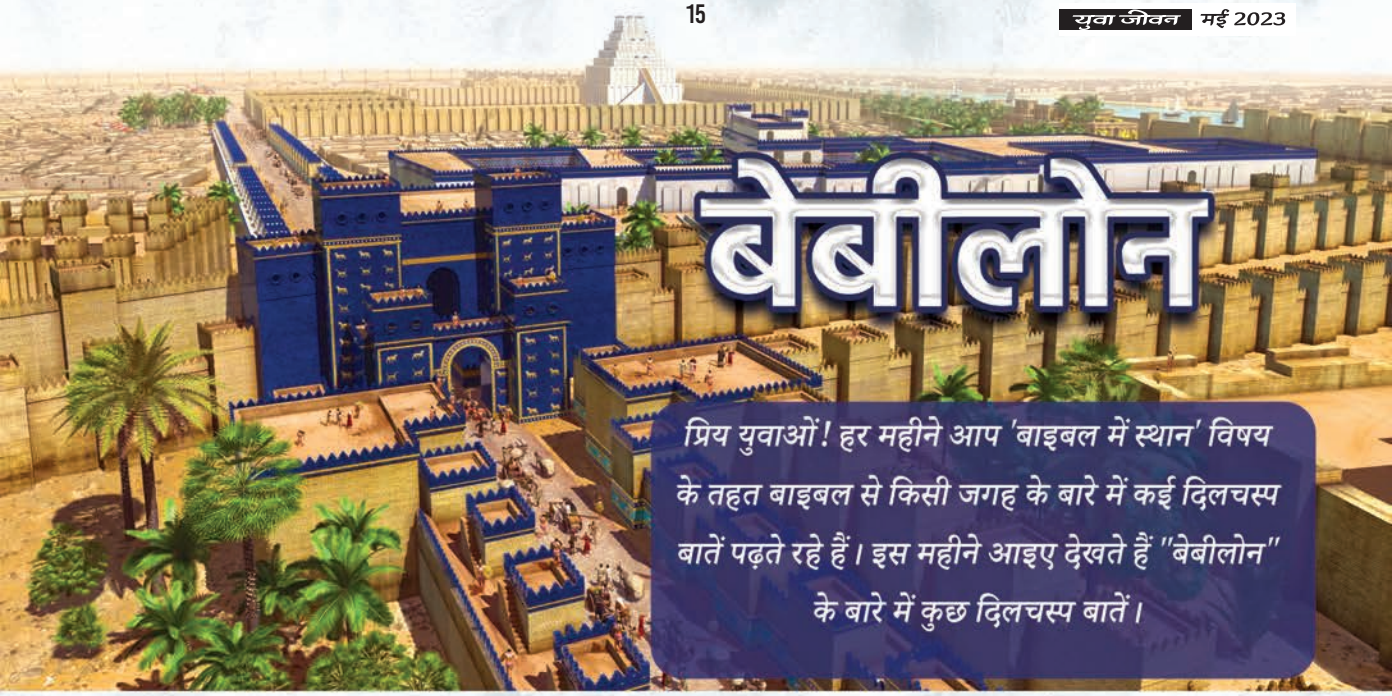

बेबीलोन

प्रिय युवाओं! हर महीने आप 'बाइबल में स्थान' विषय के तहत बाइबल से किसी जगह के बारे में कई दिलचस्प बातें पढ़ते रहे हैं। इस महीने आइए देखते हैं "बेबीलोन" के बारे में कुछ दिलचस्प बातें।

परिचय

- उन दिनों 'बाबेल' बेबीलोन की राजधानी थी।
- क्या आप जानते हैं कि इस बेबीलोन को सबसे पहले किसने बनाया था? जैसा कि बाइबिल उत्पत्ति 10:10 में कहती है, बेबीलोन प्राचीन काल के राजा 'निम्रोद' द्वारा निर्मित शहरों में से एक है।
- बेबीलोन मेसोपोटामिया के क्षेत्र के आसपास स्थित है।
- दो प्रसिद्ध नदियाँ, फरात और टाइग्रिस इस देश से होकर गुजरती हैं।
- बेबीलोन उत्पत्ति से लेकर रहस्योद्घाटन तक बाइबिल हमें 280 से अधिक संदर्भ देती है।
- हालांकि यह 2300 ईसा पूर्व में बनाया गया था, यह 1900 में राजा के महल की स्थापना के बाद एक प्रसिद्ध स्थान बन गया।

बेबीलोन की मुख्य विशेषताएं।

- यह लगभग 4000 साल पुराना एक प्राचीन शहर है।
- बेबीलोन एक बड़ा शहर था जिसमें जड़ी हुई ईंटें, खूबसूरती से नक्काशी की गई और सजी हुई इमारतें, शेरों की मूर्तियाँ थीं।
- बेबीलोन के हैंगिंग गार्डन विश्व प्रसिद्ध हैं।
- इतिहासकारों का मानना है कि बेबीलोन 20,000 से अधिक आबादी वाला पहला प्राचीन शहर था।
- जॉर्ज स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'असीरियन डिस्कवरीज' में लिखा है कि वह बेबीलोन शहर की परिधि को लगभग 8 मील मानते थे।
- नगर फरात नदी के दोनों किनारों पर स्थित था।

बेबीलोन और उसकी असफलता

- परमेश्वर ने कभी-कभी इस्राएल को दण्ड देने के लिए बेबीलोन साम्राज्य का उपयोग किया।
- लेकिन नबियों ने पहले ही बता दिया था कि बेबीलोन के पाप अंततः उसके स्वयं के विनाश का कारण बनेंगे।
- जैसा कि यिर्मयाह 50:2 में उल्लेख किया गया है, बेबीलोन के लोग मर्दुक या मेरोदक और बेल जैसे बुतपरस्त देवताओं की पूजा करते थे।
- झूठे देवताओं की भक्ति के अलावा, प्राचीन बेबीलोन में लैंगिक अनैतिकता बड़े पैमाने पर थी। सांस्कृतिक और मंदिर वेश्याएं आम थीं।
- जैसा कि दानिय्येल के चौथे अध्याय में कहा गया है, हम देख सकते हैं कि, जब राजा नबूकदनेस्सर ने शेखी बघारी कि, "क्या यह बड़ा बेबीलोन नहीं है, जिसे मैं ने अपने पराक्रम से राज निवास और अपने प्रताप की प्रतिष्ठा के लिये बनाया है?" यह पूरी तरह से नष्ट हो गया था।
- नया नियम बेबीलोन को पाप के प्रतीक के रूप में पहचानता है
- जैसे भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी, घमंडी बेबीलोन आज उजड़ गया है।

"...परमेश्वर अभिमानियों का साम्हना करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है" (1 पतरस 5:5)।

प्रार्थना गाइड

मई-2023

Prayer: Bennita

1. पिछले साल भारत में हीट स्ट्रोक से करीब 90 लोगों की मौत हुई थी। आइए हम इन मौतों को रोकने के लिए प्रार्थना करें।

2. भारत के 9 शहरों में पिछले साल 45 डिग्री सेल्सियस पहुंचा तापमान। मौसम विभाग के मुताबिक इस साल भी उत्तर पूर्व और पूर्वी भारत में रहेगी भीषण गर्मी। आइए हम कम हीट स्ट्रोक के लिए प्रार्थना करें।

3. गर्मियों के दौरान कई राज्यों में पानी की गंभीर कमी होती है। आइए हम प्रार्थना करें कि इस वर्ष पानी की कमी ना रहे।

4. हम परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें उचित समय पर वर्षा की आशीष दे, ताकि पानी की कोई कमी न हो।

5. आइए हम भारत के 123 महत्वपूर्ण जल निकायों में पानी की निरंतर उपलब्धता के लिए प्रार्थना करें।

6. हम परमेश्वर से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें, ताकि गर्मी के दिनों में कोई बीमार न हो।

7. दुनिया भर में 2.2 अरब से अधिक लोग स्वच्छ पानी की कमी के कारण पीड़ित हैं। आइए हम प्रार्थना करें कि वे किसी भी जल जनित रोगों से पीड़ित न हों।

8. आइए हम अपनी सरकार के लिए प्रार्थना करें कि वह जल संसाधनों को बढ़ाने और पानी को बर्बाद किए बिना संग्रहित करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करे।

9. सोमालिया में, 40 वर्षों में सबसे भयंकर सूखा छोटे बच्चों की मौत का कारण बन रहा है। आइए हम प्रार्थना करें कि देश में सूखा बदल जाए और आवश्यक सहायता प्रदान की जाए।

10. आइए हम सोमालिया में आतंकवादी हमले की रोकथाम और वहां के लोगों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

11. पिछले कुछ वर्षों में, अपर्याप्त बारिश और सूखे के कारण हुए नागरिक संघर्ष और अकाल के कारण लगभग 2.5 लाख मौतें हुईं। आइए हम उनकी समृद्धि के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

12. आइए हम परमेश्वर से अकाल, भुखमरी, यौन, हमले, सूखे और कुपोषण से पीड़ित सोमालियाई लोगों पर दया करने के लिए कहें।

13. आइए हम सोमालिया के लोगों के बीच परमेश्वर को खोजने के लिए जागृति के लिए प्रार्थना करें।

14. आइए हम प्रार्थना करें कि दुनिया भर में होने वाले 1.10 मिलियन गर्भपात और गर्भपात के कारण होने वाली महिलाओं की मृत्यु को रोका जाए।

15. चीन में 40 वर्षों में 33 मिलियन गर्भपात हुए हैं। आइए प्रार्थना करें कि चीनी सरकार एक अच्छा निर्णय ले और गर्भपात पर प्रतिबंध लगाए।

16. आइए हम प्रार्थना करें कि पैसे के लिए गर्भपात करने वाले डॉक्टर पश्चाताप करें और सभी राष्ट्रों में गर्भपात पर प्रतिबंध लगा दिया जाए।

17. आइए हम परमेश्वर से उन युवाओं और बच्चों की रक्षा करने को कहें जो कम उम्र में इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग करके गलत रास्ते पर जा रहे हैं।

18. आइए हम प्रार्थना करें कि बच्चों और किशोरों द्वारा सामाजिक प्रथा को विनियमित किया जाए और अच्छे माता-पिता-बच्चे के संबंधों के लिए।

19. भारत में अब कोयले की भारी कमी है। आइए हम प्रार्थना करें कि हमारा देश पर्याप्त कोयले का उत्पादन करे।

20. आइए हम प्रार्थना करें कि बिजली संयंत्र की कोयले की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जाए ताकि बिजली की निर्बाध आपूर्ति की जा सके।

21. देश में बिजली की बढ़ती मांग को देखते हुए, हम प्रार्थना करें कि सरकार विभिन्न बिजली उत्पादन परियोजनाओं को हाथ में ले।

22. आइए हम भारत के सभी 173 थर्मल पावर प्लांटों में कोयले की निर्बाध उपलब्धता और कोयले की आपूर्ति में व्यवधान को पूर्ण रूप से समाप्त करने के लिए प्रार्थना करें।

23. आइए हम पर्याप्त मालगाड़ियों के लिए प्रार्थना करें और कोयला खदानों को बिजली संयंत्रों तक पहुँचाएँ।

24. आइए हम प्रार्थना करें कि सरकार निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए गंभीर कदम उठाए।

25. पिन्तेकुस्त अनुभव के लिए हम सभी कलीसिया के विश्वासियों के बीच प्रेम और एकता के विकास के लिए प्रार्थना करें।

26. आइए हम प्रार्थना करें कि चर्च के सभी विश्वासियों और पिन्तेकुस्त अनुभव के लिए जागृति की आग जलाई जाए।

27. आओ हम प्रार्थना करें कि बालकों और जवानों में जागृति आए, और जवानों में प्रार्थना की आत्मा उंडेली जाए।

28. आओ हम प्रार्थना करें कि कलीसियाओं में काम करनेवाली फूट की आत्माएं बंधी रहें और विश्वासी और पास्टर एक हों।

29. आइए हम प्रार्थना करें कि पूरे देश में सभी चर्च सक्रिय रूप से सुसमाचार का प्रचार करें, लोगों को उद्धार की ओर ले जाएं, और शिष्य बनाने वाले चर्च बन जाएं।

30. हम बचाए हुए युवकों के लिए प्रभु की सेवा करने के लिए, आत्माओं के लिए बोझ होने के लिए, कलीसियाओं के बढ़ने और बढ़ने के लिए, और पुनरुद्धार के लिए प्रार्थना करें।

31. आइए हम कलीसियाओं और पादरियों के विरुद्ध काम करने की शैतान की योजनाओं के विनाश के लिए प्रार्थना करें।

हर दिन एक मिनट निकालें और पूरे मन से उस विशेष तिथि पर दिए गए प्रार्थना बिंदु के लिए प्रार्थना करें!

इसहाक के जन्म में देरी!

जब इब्राहीम 75 वर्ष का था, तब परमेश्वर ने उससे कहा, "आकाश की ओर दृष्टि करके तारों को गिन, यदि तू उन्हें गिन सकता है। तब उसने उसे प्रतिज्ञा दी, " कि तेरा वंश ऐसा होगा" (उत्पत्ति 15:5)। जैसे ही यहोवा ने वचन दिया, वह पूरा नहीं हुआ। इसके बाद उन्होंने इसहाक के पैदा होने के लिए 25 साल तक इंतजार किया। परमेश्वर ने 25 साल की देरी क्यों की? उन 25 वर्षों की देरी के दौरान, इब्राहीम और सारा प्रभु द्वारा दिए गए वादे पर विश्वास करने के लिए थोड़े चकित थे। इस वजह से इब्राहीम से इश्माएल का जन्म हुआ और इस वादे के पूरा होने के लिए 25 साल इंतजार किया। परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास की परीक्षा ली। इस वादे के पूरा होने के लिए इब्राहीम ने 25 साल तक इंतज़ार किया। सारा अब्राहम से गर्भवती हुई और उसके बुढ़ापे में उसी नियत समय पर जिसके विषय परमेश्वर ने उस से कहा था, एक पुत्र उत्पन्न हुआ। (उत्पत्ति 21:1,2)।

प्रिय नौजवानों! यदि परमेश्वर आपसे कोई वादा करता है, तो धैर्यपूर्वक उसके पूरा होने की प्रतीक्षा करें। इसहाक को जन्म देने से पहले इब्राहीम ने 25 साल इंतजार किया। भले ही देर हो रही हो, परमेश्वर के वादे पूरे होंगे।

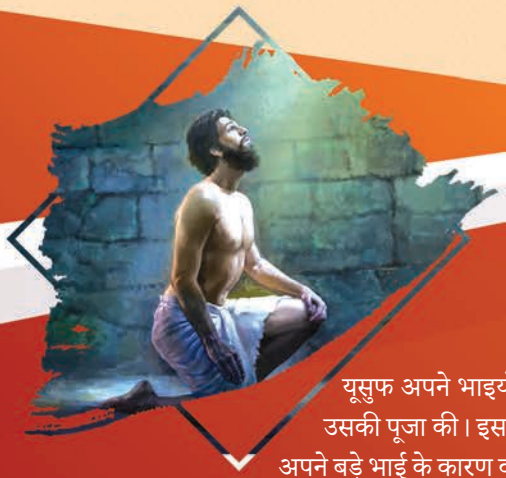

यूसुफ - सपने के पूरा होने में देरी!

यूसुफ अपने भाइयों और पिता को बताया कि उसने एक सपना देखा जिसमें सूर्य, चंद्रमा और सितारों ने उसकी पूजा की। इस वजह से भाइयों ने यूसुफ से दुश्मनी पाल ली और उसे मारने की योजना बनाई। परन्तु अपने बड़े भाई के कारण वह मिस्र के राजा पोतीपर के हाथ चान्दी के बीस सिक्कों में बेचा गया, और मिस्र में पहुंचा दिया गया। एक दिन पोतीपर की पत्नी द्वारा झूठा आरोप लगाने के बाद यूसुफ को जेल भेज दिया गया। दो सेवकों ने, जिन पर दोष लगाया गया था और जिन्हें फिरौन ने बन्दीगृह में डाल दिया था, एक स्वप्न देखा। यूसुफ ने उस स्वप्न का अर्थ समझाया। बाद में मिस्र के राजा फिरौन ने एक स्वप्न देखा। मिस्र के जादूगर और ज्योतिषी राजा के सपने का अर्थ नहीं बता सके। यूसुफ ने इसका अर्थ समझाया कि फिरौन ने महसूस किया कि परमेश्वर यूसुफ के साथ था और उसने उसे मिस्र का शासक बनाया। यूसुफ को अपने सपने के सच होने के लिए 21 साल इंतजार करना पड़ा।

प्रिय नौजवानों! यूसुफ के अपने भाई उससे घृणा करते थे और उन्होंने उसे एक दास के रूप में बेच दिया था। उस पर झूठा आरोप लगाया गया और जेल में डाल दिया गया। लेकिन उसने 21 साल तक दर्शन के पूरा होने का इंतजार किया और परमेश्वर से शानदार आशीष प्राप्त की।

लाजर के जी उठने में देरी

यीशु ने लाज़र को, जिससे वह इतना प्यार करता था, यह सुनने के बाद भी कि वह बीमार है, मिलने नहीं गया। हालाँकि यीशु को लाजर की बीमारी के बारे में पता था, फिर भी उसने दो दिनों के बाद ही यात्रा शुरू की क्योंकि वह जानता था कि "यह बीमारी मृत्यु के लिए नहीं है, बल्कि परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि इसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।" तब तक, लाज़र को मरे और दफ़नाए हुए चार दिन बीत चुके थे। यीशु ने अपनी संवेदना, दुख साझा की और लाजर की मृत्यु पर रोया। तब जब उसने कब्र में जाकर पत्थर हटाने को कहा गया, तो मार्था ने कहा, "हे प्रभु, अब तो उसमें से दुर्गन्ध आती है, क्योंकि उसे मरे हुए चार दिन हो गए हैं।" जब उन्होंने यीशु की बात पर विश्वास किया और पत्थर को लुढ़का दिया, तो लाजर जो गाड़ा गया था, क्रब में से जी उठा। वहां परमेश्वर के नाम की महिमा होती थी। इस कारण बहुत से यहूदी यीशु पर विश्वास करते थे' (यूहन्ना 11:1-45)।

प्रिय नौजवानों!

अगर किसी बात में देरी होती है तो हम तुरंत अधीर हो जाते हैं। जब देरी होती है तब हमारा विश्वास है। यदि यीशु लाज़र को चंगा कर देता जब वह बीमार था तो ऐसा शानदार चमत्कार नहीं होता। कभी-कभी वह देरी कर सकता है कि परमेश्वर का नाम महिमा पाए। इसलिए यह समझें कि विलंब बाधा पर नहीं है!

दाऊद को राजा नियुक्त करने में देरी

शमूएल भविष्यद्वक्ता ने इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया। इसे साबित करने के लिए, दाऊद गोलियात को मारकर और उसे हरा कर एक उपलब्धि हासिल करता है। पर, उसे महल से निकाल दिया गया। उसे रेगिस्तानों और गुफाओं में रहने के लिए मजबूर किया गया था। दाऊद ने शायद सोचा होगा कि यदि यह सच है कि परमेश्वर ने इस्राएल के राजा के रूप में मेरा अभिषेक किया है, तो मैं जंगल में क्यों रहूँ? परन्तु, राजा बनने से पहले ही, परमेश्वर ने शाऊल को दाऊद के हाथ में देकर दाऊद की परीक्षा ली। शाऊल दाऊद की खोज में निकला परन्तु उसके हाथ में पकड़ा गया। दाऊद के अलावा कोई और होता तो शाऊल को मार डालता। लेकिन, उसने शाऊल को नहीं मारा, भले ही उसके पास उसे दो बार मारने का अवसर था। उसने पूरे मन से शाऊल को दिया। इसे देखने के बाद, यहोवा ने दाऊद को राजा नियुक्त किया (1 शमूएल 5:4,5)।

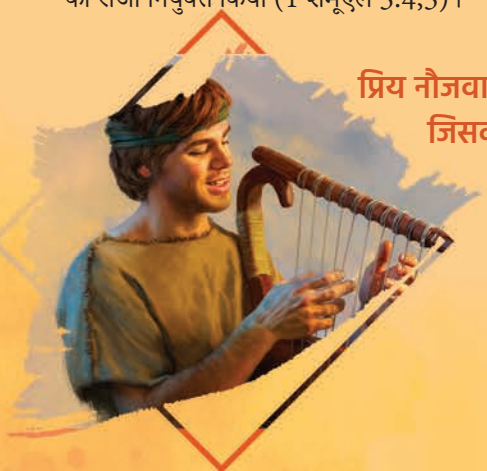

प्रिय नौजवानों! क्या आपने उस परीक्षण को देखा जो दाऊद के जीवन में आया था जिसका अभिषेक हुआ? कभी-कभी परमेश्वर हमें विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से डाल कर ऊपर उठाते हैं। यह सोच कर कि देरी हो रही है परमेश्वर से पीछे मत हटो। यदि विलम्ब भी हो, तो भी यहोवा अपके वचन को अपने हाथ से पूरा करेगा, जो उस ने मुंह से कहा है।।

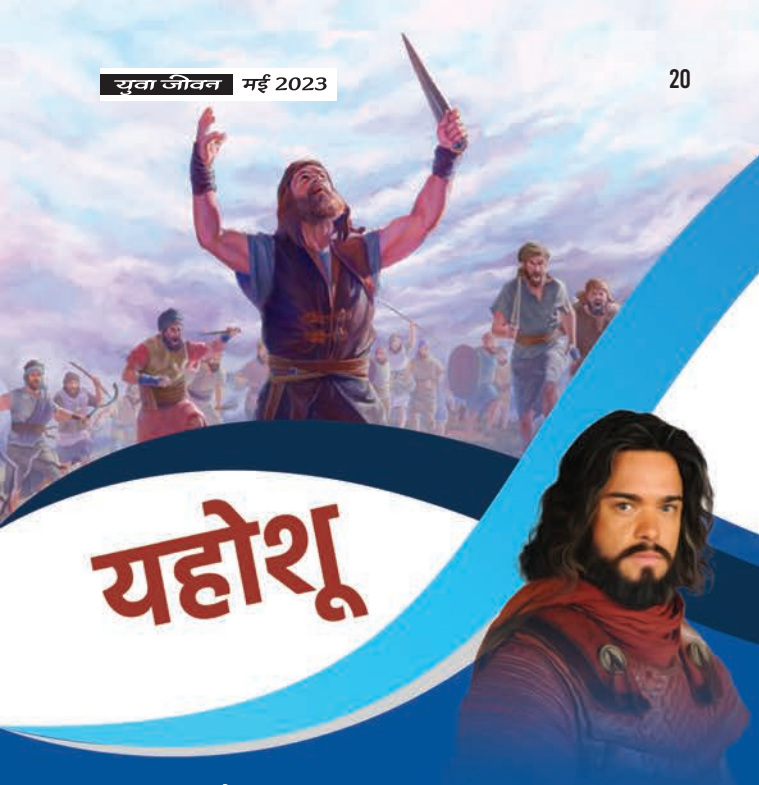

यहोशू

अपने वादों को विरासत में देने के लिए नियम और शर्तें!

प्रिय भाइयों और बहनों! हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से तुम्हें नमस्कार। हमारे "वादों और शर्तें" लेख में, इस महीने, हम एक युवक यहोशू के बारे में जानेंगे। यहोशू का अर्थ है 'यहोवा उद्धारकर्ता' या 'यहोवा उसका सहायक है'

प्रभु के आदेश पर। मूसा ने यहोशू को उसके बाद इस्राएल का अगुवा नियुक्त किया। यहोशू के सामने बहुत से कार्य थे। पहला काम यरदन नदी को पार करना था। यहोशू 3:5 में, एक शर्त के साथ यरदन नदी को पार करने की प्रतिज्ञा दी गई थी। "और यहोशू ने लोगों से कहा, अपने को पवित्र करो, क्योंकि कल यहोवा तुम्हारे बीच चमत्कार करेगा।" (यहोशू 3:5)

यह यरदन नदी पूरे कटनी के मौसम में अपने तट से ऊपर बहती है (यहोशू 3:15)। सामान्य रूप से बहने वाली नदी को पार करना बहुत कठिन होगा। पर अब इस विकराल नदी को पार करने की सम्भावनाओं को सोचकर सब व्याकुल हो गए। उस समय जब सन्दूक को उठाए हुए याजकों के पांव उमड़नेवाली नदी पर पड़े, जो ऊपर से नीचे उतरती थी, थम गई, और ढेर होकर उठ खड़े हुई (यहोशू 3:15,16)। वचन कहता है कि सभी लोग बिना पानी के सूखी जमीन से गुजरे।

हमने सब्जियों, पत्थरों, मिट्टी आदि के ढेर देखे होंगे। केवल ठोस चीजों का ढेर लगाया जा सकता है। तरल पदार्थ का ढेर नहीं लग सकता। पर हमारे परमेश्वर ने यरदन नदी ढेर लगया जो उसके लोगों को गुजरने से रोकता है। हालेलुयाह!

यरदन नदी के अलग होने का रहस्य

याजकों के पांव छूते ही उफनती हुई यरदन नदी दो भाग हो गई, यह उनके पांवों की शक्ति के कारण नहीं था। उनके पैर इतने शक्तिशाली नहीं थे। रहस्य यह था कि उनके पास वाचा का सन्दूक था जिसमें पत्थर की दो पटियाओं पर लिखी हुई परमेश्वर की आज्ञाएँ थीं (2 इतिहास 15:10)। परमेश्वर के वचनों से खुदी हुई पत्थर की पटियाओं के साथ वाचा का सन्दूक ले जाना स्वयं परमेश्वर को उठाने के बराबर है। क्योंकि हमारा परमेश्वर शुरुआत में शब्द था जैसा कि हम युहन्ना 1 में पढ़ते हैं। एक बात जो हमें यहाँ ध्यान देने की आवश्यकता है वह यह है कि सामान्य लोग वाचा का सन्दूक नहीं उठा सकते हैं जो उच्च महिमा और सम्मान का है।

यहां तक कि वे इसे छू भी नहीं सकते। हम जानते हैं कि जब उज्जा ने परमेश्वर के सन्दूक को छूकर उसे

मारा और वह मर गया (2 शमूएल 6:6,7)। इसलिए, वाचा के सन्दूक को उठाने वाले याजकों को केवल परमेश्वर द्वारा चुना जा सकता है, और उन्हें बहुत पवित्र होना चाहिए। यही कारण है कि यहोशू 3:5 में, यहोशू कहता है, "अपने को पवित्र करो, क्योंकि कल यहोवा तुम्हारे बीच चमत्कार करेगा।" इन वचनों के अनुसार जो परमेश्वर ने यहोशू से कहे, सारे इस्राएल के लोग, विशेष करके याजक, अपने पापों को मानकर और परमेश्वर के साम्हने खड़े होकर होमबलि करके अपने आप को पवित्र कर सकते थे। एक ऐतिहासिक चमत्कार वहाँ केवल इसलिए हुआ, क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति को धारण करने वाले याजकों ने स्वयं को पवित्र रखा और परमेश्वर के सन्दूक को ले गए, जैसा कि उन्होंने कहा था, यरदन नदी को विभाजित करके एक महान चमत्कार किया।

वाचा का सन्दूक

प्यारों! उन दिनों याजक वाचा के सन्दूक में वचन और परमेश्वर की उपस्थिति को ले चलते थे। आज, हम वाचा का सन्दुक हैं। यीशु आज हमारे साथ रहकर प्रसन्न हैं। क्या हम जीवित परमेश्वर को अपनी देह रूपी मन्दिर में, वाचा के सन्दूक में जो हमारा हृदय है, ले चलने को तैयार हैं? आज, बहुतों के परमेश्वर का मन्दिर अपवित्र है और बुरे विचारों और वचनों से अशुद्ध है।

भजन I I I 9: 9 में हम पढ़ते हैं, "जवान अपनी चालचलन को किस उपाय से शुद्ध रख सकता है? तेरे वचन के अनुसार चलने से।" परन्तु आज बहुत से लोगों के पास परमेश्वर के वचन को पढ़ने का समय नहीं है। हम यह कहकर उसकी उपेक्षा कर देते हैं कि बुढ़ापे में हमें इसे पढ़ने का समय मिलेगा। कई किशोर टीवी शो के आदि हैं, इंटरनेट ब्राउज़ करते हैं, और फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम आदि जैसे सोशल मीडिया ऐप का उपयोग करते हैं, ऐसा होना हमें विनाश के रास्ते पर ले जाता है। तुम्हारा घर तभी आशीषित होगा जब तुम परमेश्वर के वचन को ले जाने वाली वाचा का सन्दूक हो। फिर, जहाँ भी आप अपना पैर रखेंगे, वहाँ चमत्कार होंगे। जो समस्याएं आपकी प्रगति में बाधक हैं, वे दूर होंगी। लोगों की योजनाएँ जो आपका विरोध करते हैं विफल हो जाएगा। परन्तु इन बातों के घटित होने के लिये, तुम्हें परमेश्वर के वचन को पढ़कर अपने आप को पवित्र रखना होगा।

प्रिय नौजवानों! उस समय इस्राएल के लोग और वाचा का सन्दूक उठानेवाले याजक अपने आप को पवित्र किया, और परमेश्वर ने चमत्कारी तौर से यरदन नदी को भाग कर दिया। जब आप भी प्रतिदिन परमेश्वर के वचन के द्वारा अपने आप को निर्मल रखते हैं, परमेश्वर तुम्हारे जीवन में यर्दन नदी के उमड़नेवाले ढेर को खड़ा कर देगा, जो आपको बर्बाद करने की कोशिश कर रहे थे। चिंता मत करो! यीशु को अपने साथ रहने दें, जो आज भी वचन के रूप में हम में वास करते हैं। पवित्र हृदय से उसे धारण करने के लिए अपने आप को समर्पित करो और उन सभी आदतों, पापों और घिनौने कामों को दूर करके जिनसे यहोवा घृणा करता है, स्वयं को पवित्र करो। यहोवा तुम्हारे बीच चमत्कार करेगा!

Coffee with रिपोर्टर

नूह की पत्नी

जिस महिला के नाम का उल्लेख बाइबिल में नहीं है, उनमें से नूह की पत्नी उल्लेखनीय है जो अपने पति के नाम से जानी जाती है। वह प्रेम, नम्रता, धैर्य, विनम्रता, आज्ञाकारिता, ईश्वर का भय और धीरज रखने वाली एक मेहनती महिला है। संक्षेप में, वह आत्मा के फलों से भरी एक गुणी महिला थी, नीचे हम द्वारा आयोजित बातचीत का एक काल्पनिक संकलन देखेंगे। नूह की पत्नी के साथ हमारे पत्रकार, जिन्हें नूह के सफल मसीही जीवन के समर्थन के स्तंभ के रूप में देखा गया।

रिपोर्टर : हैलो अम्मा!

नूह की पत्नी: नमस्ते भाई।

रिपोर्टर : हमारे नौजवान आपके बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं। क्या आप हमें अपने बारे में कुछ बता सकती हैं?

नूह की पत्नी: ठीक है, भाई। वह समय था जब मनुष्य पृथ्वी पर गुणा करना शुरू कर दिये थे। मेरे पति आदम की दसवीं पीढ़ी थे, उसका नाम नूह है। वह हर चीज में न्यायी और धर्मी था। मुझे और मेरे बच्चों को परमेश्वर का भय मानना सिखाया। वह नियत समय में यहोवा को उचित सम्मान और बलिदान देता। वह हमेशा परमेश्वर के साथ रहना चाहता था। मैं इस धरती पर उनकी पत्नी के रूप में रहने के लिए परमेश्वर की स्तुति करती हूं।

रिपोर्टर: हमें उस भीषण बाढ़ के बारे में बताएं।

नूह की पत्नी: परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में और अपने हाथ से उसके सभी प्राणियों में सबसे विशेष बनाया। परमेश्वर चाहता था कि लोग समय बिताएं और उसके साथ संगति करें। लेकिन मनुष्यों के दिलों का झुकाव इस ओर नहीं था। जब मनुष्यों का अधर्म पृथ्वी पर बढ़ गया, तब परमेश्वर पछताया कि उसने मनुष्यों को पृथ्वी पर बनाया।

इसलिए परमेश्वर ने दुष्ट लोगों के लिए सभी जानवरों, रेंगने वाले जीवों और हवा के पक्षियों को पानी के साथ नष्ट करने का फैसला किया। परन्तु मेरे पति पर यहोवा की दृष्टि में अनुग्रह हुआ, और उसके कारण हमारे सारे घराने पर अनुग्रह हुआ। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें एक सन्दूक बनाने को कहा।

रिपोर्टर: अच्छा, तुम्हारे पति ने सन्दूक कैसे बनाया? मुझे इसके बारे में थोड़ा बताओ।

नूह की पत्नी: यह वास्तव में बहुत मुश्किल था, भाई। मेरे पति हर किसी को परमेश्वर की योजना के बारे में बता रहे थे और बता रहे थे कि कैसे परमेश्वर बारिश के द्वारा नाश करने की योजना बना रहे थे। लेकिन, जब हमने अपने लोगों को परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी होने के लिए कहा किसी ने भी इसे स्वीकार नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने इसका मज़ाक उड़ाया। इसने मेरे पति को थका दिया। इसलिए उन्होंने ज्यादातर अकेले ही सारा काम किया। लकड़ी काटने या समतल करने के लिए बिना किसी यांत्रिक सहायता के, मेरे पति ने खुद ही यह काम किया। वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद ही सन्दूक का काम पूरा हो गया।

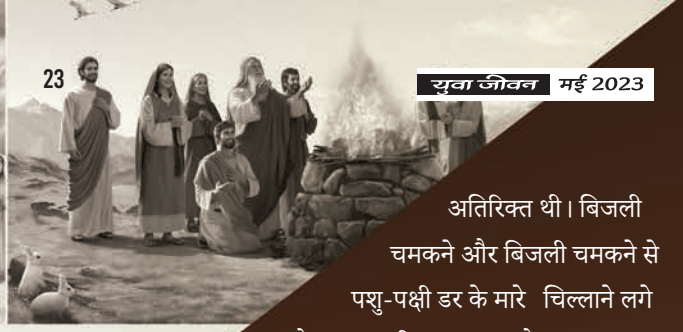

हमारे बेटे भी छोटे बच्चे थे जब परमेश्वर ने बाढ़ की योजना का वर्णन किया था। लेकिन बाद के दिनों में हमारे बेटों ने एक बड़ी भूमिका निभाई।

रिपोर्टर: आपने अपने पति की मदद कैसे की?

नूह की पत्नी: हर बार जब मेरे पति बाहर जाते हैं और लोगों के व्यवहार के लिए खेद महसूस करते हैं, तो मैं उन्हें दिलासा देती और प्रोत्साहन के शब्द बोलती। मैं बच्चों और परिवार के मामलों का यथा संभव ध्यान रखती। मैंने परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति के लिए सभी परिस्थितियों में अपने पति को अपना अधिकतम सहयोग दिया और स्वर्ग से परमेश्वर की सहमति के लिए दिन-रात प्रार्थना की।

रिपोर्टर: आप इस कथन से जीते हैं कि 'हर आदमी की सफलता के पीछे' एक महिला होती है '. ठीक है, क्या आप पहले से ही जानवरों, उनके आवास और भोजन की आदतों के बारे में जानते हैं?

नूह की पत्नी: नहीं, भाई, जब परमेश्वर ने उन्हें जीवित रखने के लिए जानवरों, पक्षियों और जीवित प्राणियों को सन्दूक में लाने का आदेश दिया, तभी हमने उनके आवास की खोज की और उनके खाने की आदतों पर ध्यान दिया। जब मेरे पति के हाथ लकड़ी के काम से थक गए, तो वे विराम लेते।

फिर वह जानवरों के आश्रय की तलाश में चला जाता और थोड़ा छिपकर बैठ जाते। कई घंटों तक वह उनके निवास स्थान को देखता रहते। फिर वह उनके आदि व्यंजन लाते और उन्हें तम्बू में रख देते।

कई दिनों, महीनों, और वर्षों तक जानवरों और पक्षियों की प्रजातियों का अवलोकन करने के बाद, स्थान की उपलब्धता पर विचार करते हुए, हम उनके बच्चों को, अशुद्ध जानवरों के प्रत्येक जोड़े को और शुद्ध जानवरों के सात जोड़े को परमेश्वर के आदेश के अनुसार सन्दूक में ले आए। हमने जल-प्रलय के बाद यहोवा को होमबलि चढ़ाने के लिए कुछ शुद्ध जानवरों का उपयोग किया।

रिपोर्टर: वास्तव में आप और आपके पति प्रशंसा के पात्र हैं। कई प्रकार के जानवरों और पक्षियों के साथ जहाज़ में 5 महीने रहना, उनके साथ आपका अनुभव कैसा रहा?

नूह की पत्नी: पक्षियों की चहचहाहट की आवाज़, जानवरों के भयानक गुर्राने से पहले कुछ दिनों के लिए सोना मुश्किल हो गया था। गड़गड़ाहट और रोशनी और अतिरिक्त थी। बिजली चमकने और बिजली चमकने से पशु-पक्षी डर के मारे चिल्लाने लगे और जब पानी ऊपर उठा और सन्दूक हिलने लगा तो हम भी डरे और व्याकुल हो उठे। समय के साथ-साथ जहाज़ के भंडारण कक्ष से भोजन लेने और इसे संबंधित जानवरों को खिलाने, अंडे देने वाली पक्षियों के अंडे इकट्ठा करने, दूध देने वाले जानवरों से दूध इकट्ठा करने, आवासों की सफाई और जीवित प्राणियों कचरे को साफ करने में समय व्यतीत होगा।

रिपोर्टर: हे प्रभु...आप 5 महीने इतनी तकलीफ सहकर अंदर कैसे रहे?

नूह की पत्नी: भैया, परमेश्वर की योजना पूरी हो रही है, इस संतुष्टि ने हमें खुश कर दिया।

रिपोर्टर: सुपर! अगर हर महिला धैर्यवान, विनम्र, पति की आज्ञा मानने वाली, परमेश्वर से डरने वाली, जिम्मेदार और सहनशील बनकर दूसरों के लिए उदाहरण बन जाए तो हर घर छोटा स्वर्ग बन जाएगा।

आपसे बात करना कितना रोमांचक था। ठीक है, यूथ लाइफ पत्रिका के युवा पाठकों से आप क्या कहना चाहते हैं?

नूह की पत्नी: प्रिय मित्रों, आप जो भी हों, एक परिवार के रूप में 'यीशु मसीह' के सन्दूक में आएं। कोई बारिश, बाढ़, कोरोना जैसी महामारी या प्राकृतिक आपदा आपको छू या नष्ट नहीं कर सकती। धन्यवाद, अलविदा।

रिपोर्टर: धन्यवाद अम्मा!

मातृ दिवस

मई 14, 2023

मातृ दिवस की स्थापना एक अमेरिकी, अन्ना मैरी जार्विस ने की थी। उनकी माँ ने उस क्षेत्र में 'मदर्स डे वर्क' नामक एक क्लब की स्थापना की थी जहाँ वे रहते थे और उस क्षेत्र के गाँवों की सफाई और स्वच्छता में सुधार के लिए काम कर रहे थे।

वह अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान घायलों का इलाज और इलाज कर रही थीं। 1905 में उनकी मृत्यु के बाद, उनकी माँ के प्यार को याद करने के लिए 1914 से मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाया जाता है।

देश में मातृ दिवस मनाने के लिए आपको उपहार खरीदने और अपनी मां को देने के लिए हजारों खर्च करने की जरुरत नहीं है। पर उसके विपरीत,

- चूंकि हम स्कूल, कॉलेज के काम, शादी जैसे हर दिन अपने लिए मेहनत करते हैं, इसलिए हमारे पास मां के प्यार के बारे में सोचने का समय नहीं है। आप उन्हें मदर्स डे पर याद कर सकते हैं और अपनी मां के साथ समय बिताकर उस एक दिन का आनंद उठा सकते हैं।
- अपने और शौक को छोड़कर कम से कम एक दिन के लिए अपनी मां की मदद करें।
- महीने में कम से कम एक दिन अपनी माँ को पूरा आराम दें जो परिवार के कल्याण और प्रबंधन के अलावा और कुछ नहीं सोचती हैं और उन्हें उनकी पसंदीदा गतिविधियों में शामिल करें।
- दिल से उसके खाना पकाने की सराहना करें क्योंकि वह अपनी बीमारी के बावजूद आपको स्वादिष्ट भोजन प्रदान करती है।
- उसके भाई-बहनों या दोस्तों को घर बुलाएं और उसे उनके साथ एक दिन बिताने के लिए कहें।

मातृ दिवस हमें उन बलिदानों की याद दिलाने का दिन है जो हमारी माताओं ने जीवन भर हमारे लिए किए हैं। तो इस साल आप कितने भी व्यस्त क्यों न हों, माँ ने जो कुछ भी किया है उसके लिए धन्यवाद करने के लिए कुछ समय निकालें! तुम्हारी माँ खुश होगी !!

हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा का पालन कर, और अपनी माता की शिक्षा को न तज।(नीतिवचन 6:20)

अपने पिता की बात मानो जिस से तू उत्पन्न हुआ, और जब तेरी माता बूढ़ी हो जाए, तब भी उसे तुच्छ न जानना। (नीतिवचन 23:22)